TOB बालमंच

मासिक फ़रवरी -2021 नन्हीं कलम से ..... ✍

स्कूल चलें हम विशेषांक

इस अंक में पढ़ें

खून के धब्बे सूखने के बाद काले क्यों हो जाते हैं ?

क्रिएटिव डिजाइनर :- त्रिपुरारि राय
म. वि. रौंटी, महिषी (सहरसा)

संपादिका :- रूबी कुमारी
उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)

अंक – 09

स्कूल चलें हम

सम्पादकीय

बाल कलाकारों के उत्कृष्ट क्रियाकलापों, रचनाओं, गतिविधियों को समर्पित मासिक पत्रिका "बालमंच, नन्हीं कलम से..... ✍ का 9वां अंक प्रकाशित करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

हमारे बिहार के नन्हें कलाकारों ने इस बाल पत्रिका में इतनी उत्कृष्ट कलाकारी का प्रदर्शन किया है, जिसकी प्रशंसा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं। बालमंच लगातार अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है। हमें यह बात सूचित करने में अपार खुशी हो रही है कि इस अंक में हमने जनवरी अंक के सर्वश्रेष्ठ कलाकार को "TOB उभरते सितारे🌟" के रूप में चयनित किया है इन्हें e-certificate प्रदान कर सम्मानित किया जा रहा है। तो आइए आप भी अपनी रचनाओं को मेल करें इस पते पर balmanch.teachersofbihar@gmail.com और बन जाइए 'TOB उभरते सितारे🌟'।

हमारे नन्हे मुन्ने तथा बालमंच के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ.....

रूबी कुमारी
(संपादिका)

बालमंच, नन्हीं कलम से...✍

सर्वाधिकार सुरक्षित, संपादिका

सम्पादक मंडल

संपादिका :-	रूबी कुमारी, उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)
ग्राफिक्स डिजाइनर :-	त्रिपुरारि राय, म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)
प्रूफ रीडर:-	विकास कुमार, म.वि.महिसरहो, महिषी (सहरसा)
संरक्षक:-	1. शिव कुमार 2. शिवेंद्र सुमन

-: स्थाई स्तम्भ :-

1. सम्पादकीय
2. उदबोधन
3. आवरण कथा
4. कविता
5. कहानी
6. हँसो रे बाबू
7. बूझो तो जानें
8. वैज्ञानिक कारण
9. कहानी बनाओ प्रतियोगिता
10. अखबारों की नजर में हम
11. विद्यालयी क्रियाकलाप
12. क्या आप जानते हैं ?
13. अंग्रेजी सीखें
14. ड्राइंग/पेंटिंग
15. उभरते सितारे
16. फोटो ऑफ़ द मंथ
17. हिंदी ज्ञान
18. प्रमुख दिवसें
19. प्रेरक प्रसंग
20. रोचक तथ्य

सूचना :- यदि आपमें भी है अपनी कला दिखाने की चाहत, तो आप सभी बच्चे भी हमें अपनी रचनाएँ भेजें | आप अपनी रचनाएँ हमें ईमेल balmanch.teachersofbihar@gmail.com या Whatsapp No. 6202839650 (Tripurari Roy) पर भेजें | आपकी चुनी गई उत्कृष्ट रचनाएँ, चित्रों, लेखों आदि को हम 'बालमंच' में प्रमुखता से प्रकाशित करेंगे |

उदबोधन

त्रिपुरारि राय
क्रिएटिव डिजाइनर, बालमंच

बालमंच का 'स्कूल चलें हम विशेषांक' आपको सोंपते हुए हम काफी प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं | ये माह आप सबों के लिए भी काफी महत्वपूर्ण रहा है| इस माह में आपने फिर से अपने विद्यालय में थिरकते कदम रखा होगा| मन में कई तरह की कौतुहलें होंगी | आपको अपने प्यारे गुरुजनों से मिलने का मौक़ा मिला होगा| आपने अपनी आपबीती कही होगी| आने वाले महीने में पुनः वर्ग-1 से 5 तक के लिए सुखद सवेरा आने वाला है | बस थोड़ी सावधानी अभी भी रखनी है | "दो गज की दूरी और मास्क है जरुरी" अभी भी याद रखना है| धन्यवाद सहित|

त्रिपुरारि राय
सहायक शिक्षक,
म.वि. रौंटी, महिषी (सहरसा)
मो.- 6202839650

अन्वेष, वर्ग -8 के द्वारा बनाया गया 3D पेंटिंग..... ये केवल एक A-4 साइज़ के पेपर पर पेंसिल की मदद से बनाया गया है|

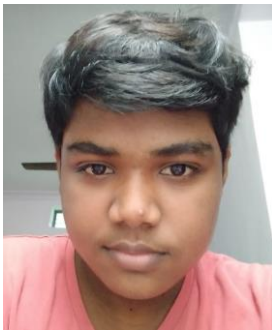

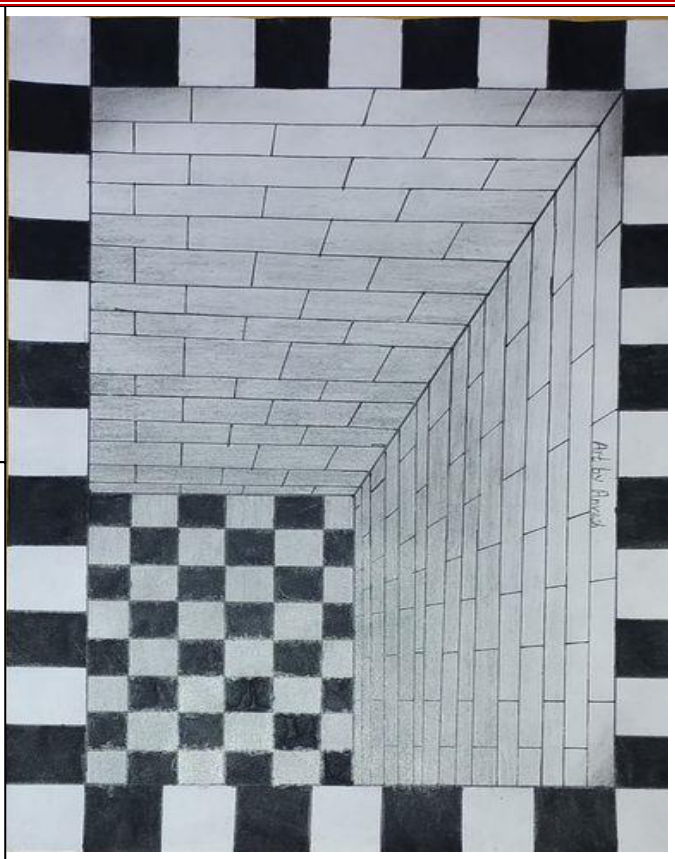

KHUSHI KUMARI

शुभकामना सन्देश

यह जानकर मुझे काफी खुशी हो रही है कि टीचर्स ऑफ बिहार के द्वारा बच्चों की अपनी पत्रिका 'बालमंच' का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका बच्चों में छिपी प्रतिभा को बाहर निकालने का एक सशक्त माध्यम है। पत्रिका में कई ऐसे स्थाई स्तंभ हैं जो बच्चों को अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए मार्ग प्रशस्त करती रहेगी। यह पत्रिका शिक्षक और बच्चों के लिए एक नवाचार है | मुझे खुशी हो रही है कि इस पत्रिका के माध्यम से त्रिपुरारि राय और रूबी कुमारी ने एक अच्छा काम करने का बीड़ा उठाया है।

मेरी तरफ से संपादक मंडल सहित टीचर्स ऑफ बिहार के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं। धन्यवाद

मनोज कुमार
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
पटना

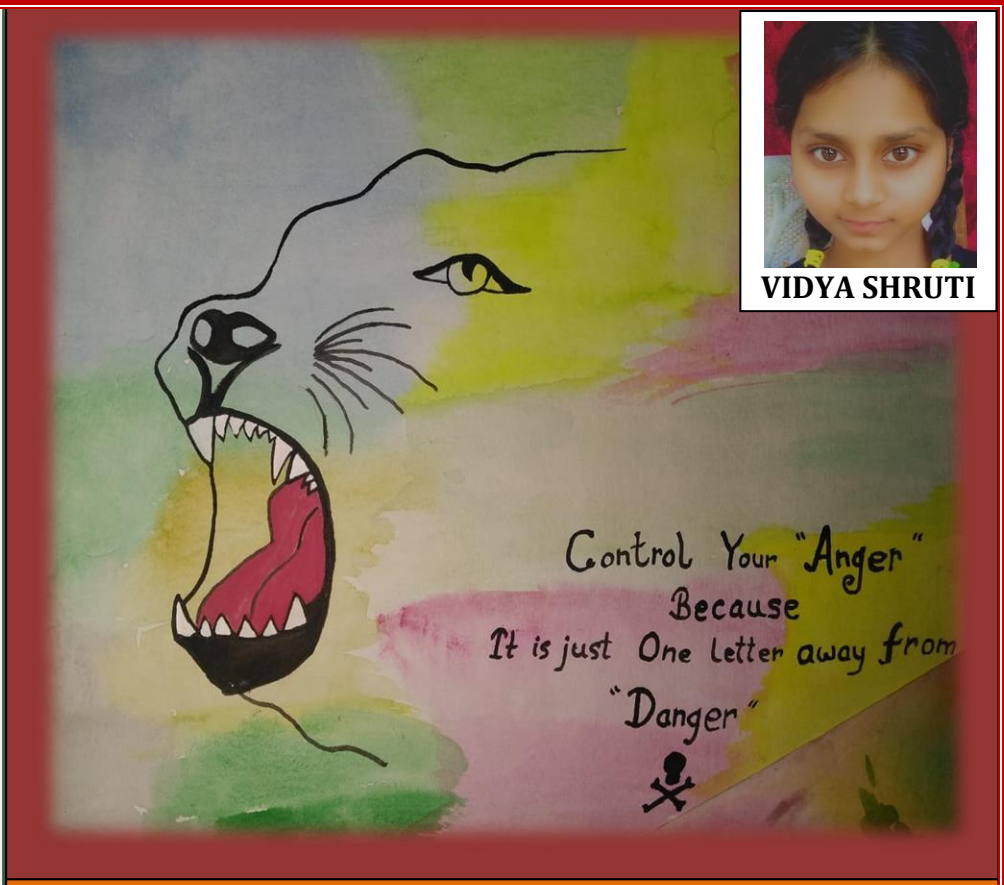

VIDYA SHRUTI

प्रेरक प्रसंग

एक बार एक संत समुद्र किनारे टहल रहे थे। तभी अचानक जोर का तूफान आया। तूफान के प्रभाव से ऊंची ऊँची समुद्र की लहरें उठने लगीं। उन लहरों के साथ सैंकड़ों मछलियां बाहर आकर गिरने लगीं। जल से बाहर हो जाने के कारण मछलियां तड़पने लगीं। स्वाभाविक दयालुता के कारण संत उन मछलियों को उठा उठाकर वापस समुद्र में फेंकने लगे। लेकिन मछलियों की संख्या सैंकड़ों में थी। जिस कारण वे सबको वापस नहीं फेक सकते थे। तब भी वे अपने प्रयास में लगे रहे। वहां से गुजरने वाले एक व्यक्ति ने उन्हें देखकर कहा, "आप व्यर्थ का परिश्रम कर रहे हैं। आप सारी मछलियों को वापस नहीं फेंक सकते। फिर यह तो रोज का काम है। आपके इस परिश्रम से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

संत ने एक तड़पती मछली को उठाकर वापस समुद्र में फेंकते हुए कहा, "इसे तो फर्क पड़ेगा न। मेरे परिश्रम से इसका तो जीवन बच जाएगा यही बहुत है।"

सीख- अगर हमारे प्रयास से किसी एक का भी भला हो सके तो हमें जरूर प्रयास करना चाहिए।

विकास कुमार (शिक्षक)
म.वि. महिसरहो, महिषी
(सहरसा)

फोटो ऑफ़ द मंथ

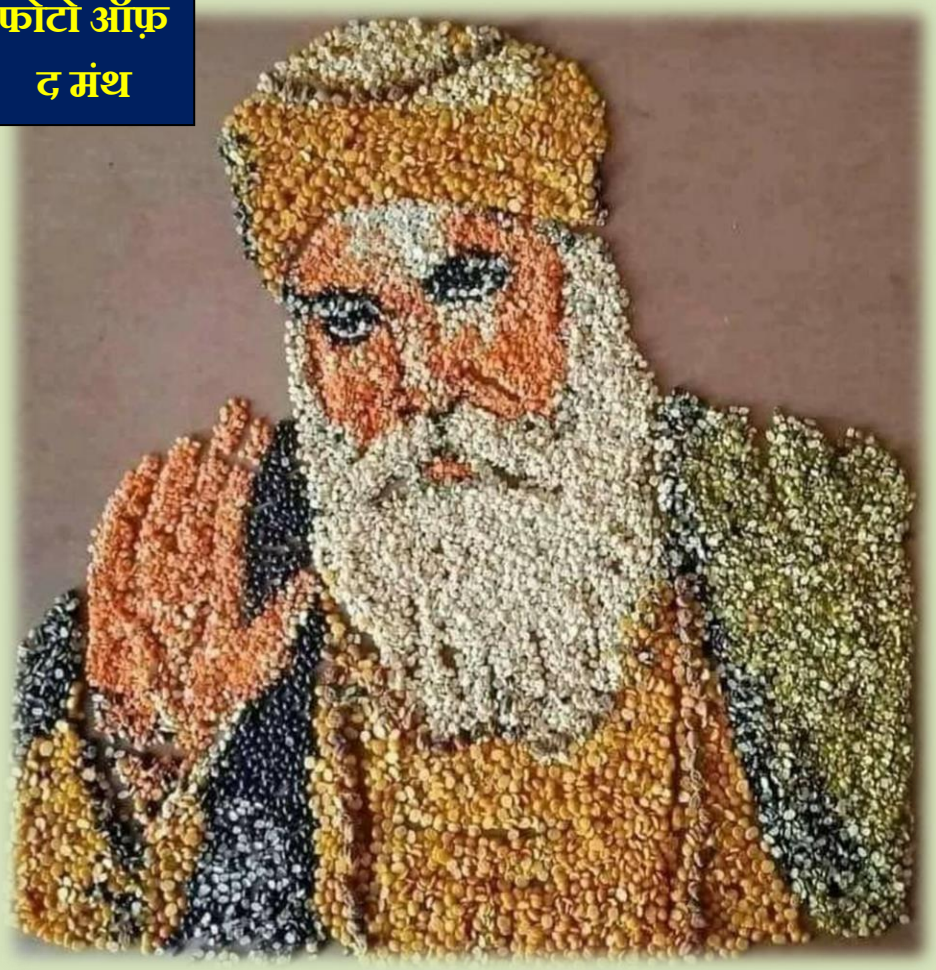

विभिन्न प्रकार के दालों से बनाया गया गुरु गोविन्द सिंह जी की तस्वीर को मृणाल कुमार (वर्ग – 9), राहुल कुमार (वर्ग – 9), नीरज गुप्ता (वर्ग – 9), वीरेंद्र गुप्ता (प्रधानाध्यापक) ने मिलजुल इसे अथक प्रयास से बनाया |

-:कहानी:-
आलसी आयुष

आयुष नाम का एक लड़का था। वह बहुत आलसी और कामचोर था। वह सारा दिन घूमता ही रहता था। जब उसकी उम्र 15 वर्ष की हो गई, तब उसकी मम्मी बोली - "अरे बेटा! तू सारा दिन घूमता ही रहता है अब बड़े हो गए हो कोई काम नहीं करोगे, पढ़ोगे -लिखोगे नहीं तो समय कैसे गुजरेगा, रोजी- रोटी कैसे चलेगी? तब आयुष बोला ,"मम्मी मुझे काम नहीं करना है और हमें कुछ अब मत बोलो हां...।" उसकी मम्मी बोली-"जब काम नहीं करोगे तब खाओगे कैसे बोलो ?अभी से आलसी रहोगे, फिर देखना बाद में मैं मर जाऊंगी तो फिर मेरा नाम लोगे।" दो वर्ष के बाद उसकी मम्मी बहुत बीमार हो गई फिर उसकी मम्मी मर गई। तब उसका बेटा बहुत रोने लगा। तब उसके मन में घूमने लगा कि जब तक मां थी मुझे खाना बना कर खिलाती थी, मुझे कहती थी काम करो, आलस छोड़ो वरना बहुत कष्ट होंगे। अब मुझे कौन खाना देगा? अब तो मुझे कुछ करना भी नहीं आता। ना घर के काम आते हैं, ना बाहर के। ना ही मैंने अच्छे से पढ़ा लिखा।अब क्या करूंगा ?यह सोचकर ही उसकी आंखों में आंसू आ गए ।वह फूट-फूट कर रोने लगा। तब उसने निश्चय किया कि-'अब मैं खूब मेहनत करूंगा और कोशिश करके पढ़ाई भी कर लूंगा। उसने दिन- रात मेहनत की, दूसरों के घर में काम किया और रात में पढ़ाई की। उसके कठिन मेहनत और मां के आशीर्वाद से जल्द ही उसने अच्छी नौकरी पाई और खुशी-खुशी रहने लगा।

नैतिक शिक्षा:- इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि बड़ों की बात हमेशा माननी चाहिए और आलस्य से हमें कोसों दूर रहना चाहिए।

बाल लेखक- **चंदन कुमार, उ.म. वि. सरौनी बौंसी, बांका**

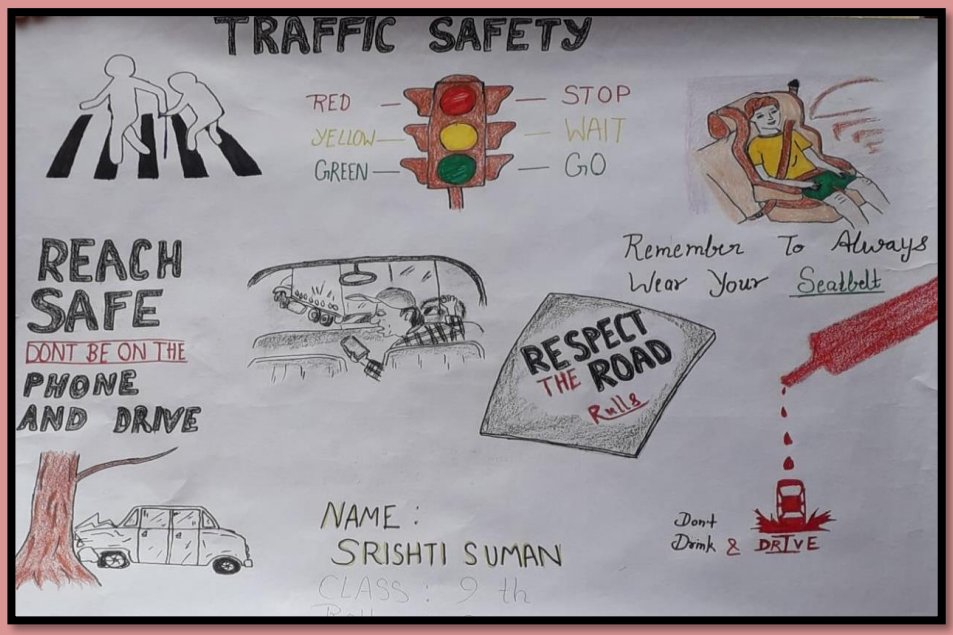

प्रखंड बिहपुर भागलपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय मिल्की मीरीचक के बच्चों द्वारा सड़क सुरक्षा विषय पर बनाए गए चित्रों का प्रस्तुतीकरण।

Wall décor art using Tharmocol and clay by Anupriya.

योग आसन...स्वास्थ्य साधन

सुन लो सुन लो काम की बात
योगासन के बहुत हैं लाभ।
तन मन रख्खे निर्विकार
करें रोज सूर्य नमस्कार
अंतर्मन मे हो अनुशासन
जब करते हम पद्मासन
भोजन का हो अच्छा पाचन
करें नित्य हम वज्रासन
करें फेफड़े अच्छा काम
रोज करेंगे प्राणायाम
ओज से मस्तक दमकाती
बड़े काम की कपालभाति
स्नायुओं मेरहे तरी
जब हो गुंजित भ्रामरी
लंबाई का पाता धन
नित्य करें जो ताड़ासन
रीढ़ मे आए लचीलापन
करलो भैय्या हल आसन
सर्व अंग पुष्टि का साधन
होता है सर्वांगासन
जोड़ों का अच्छा संचालन
करते जब हम गरुड़ासन
उदर अंगो का हो नियमन
जब हम करें मयूरासन
याद दाश्त होती अनुपम
जो नित करता शीर्षासन
कमर लचीली का कारण
बनता है त्रिकोणासन
चौड़ी छाती का साधन
रोज लगाओ दण्डासन
मन का होता शुद्धि करण
जब लगता है सिद्धासन
हो थकान का पूर्ण शमन
अंत मे कर लो शवासन

और अंत मे रख लो याद
यम नियम बिन बने न बात
करें योग का नित्य प्रयोग
दूर रहेंगे सारे रोग
आदि व्याधि सेन होंगें त्रस्त
तन मन होगा पूर्ण स्वस्थ

संतोष कुमार

ALPHABET TO ANIMALS

A - Z

A - Ape
B - Bear
C - Cat
D - Deer
E - Elephant
F - Fox
G - Goat
H - Horse
I - Iguana
J - Jackal
K - Kangaroo
L - Lion
M - Monkey
N - Nilgai
O - Otter
P - Panther
Q - Quokka
R - Rabbit
S - Squirrel
T - Tiger
U - Uakari
V - Vaquita
W - Wolf
X - Xerus
Y - Yak
Z - Zebra

:- Anu Amar Sah

*****

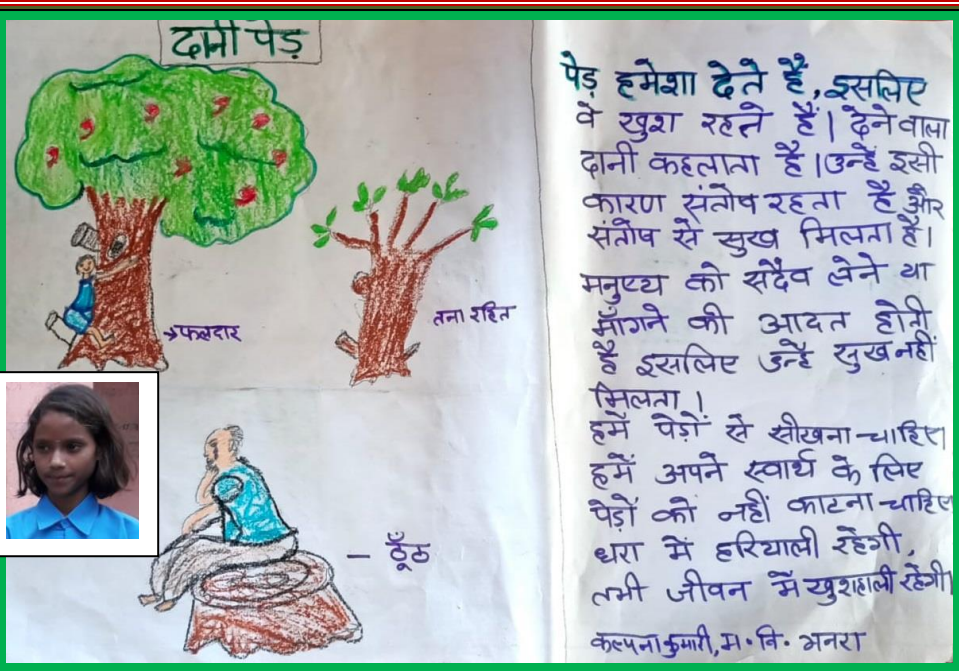

कहानी बनाओ प्रतियोगिता

बबीता कुमारी, संकुल समन्वयक, अधराठाढ़ी (मधुबनी)

दिए गए चित्र को देखें और उसपर एक सुन्दर सा कहानी लिख कर हमें भेजें| उत्कृष्ट कहानी को टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ से पुरष्कृत किया जाएगा | कहानी के साथ अपना पूरा पता और फोन नम्बर अवश्य दें |

स्कूल चलें हम

उठाओ झोला उठाओ बस्ता
शिक्षा पाना हुआ बहुत ही सस्ता
वायरस ने किया था घर में बन्द
बच्चों की पढ़ाई हुई थी मंद
वैज्ञानिकों ने कमाल कर दिया
कोरोना का टीका जल्द बना दिया
सभी लोग टीका लगवा रहें हैं
थम चुकी जीवन को आगे बढ़ा रहें हैं
बच्चे होते देश के सुनहरे कल
शिक्षित हो देश को देंगे अमृत फल
ज्ञान की लौ,तकनीक की गंगा बहाएंगे
देश को औरों से बहुत आगे ले जाएंगे
शिक्षा पाना बना मूल अधिकार
अशिक्षा का सब मिलकर करेंगे प्रतिकार
ना होगा जीवन में किसी को कोई ग़म
शिक्षा और ज्ञान पाने स्कूल चलें हम
जो बच्चे अपने अपने स्कूल नहीं जाएंगे
वो देश और अपने अधिकारों को नहीं समझ पाएंगे
मुफ्त और अनिवार्य हुआ शिक्षा को पाना
अभिभावक ध्यान दें,चलेगा नहीं कोई बहाना
हम सब शिक्षकों ने दिल से है ठाना
देश को सौ प्रतिशत शिक्षित है बनाना
जिंदगी में भले लाख हो मुसीबत और गम
फिर भी पढ़ने स्कूल चलें हम, स्कूल चलें हम
प्रभु ने बड़े पुण्य से हमें शिक्षक ही बनाया
बच्चों के बीच रहने का स्वर्ग सा आनंद दिलाया

:- VIKASH KUMAR, UHMS GALGALIA, THAKURGANJ (KISHANGANJ)

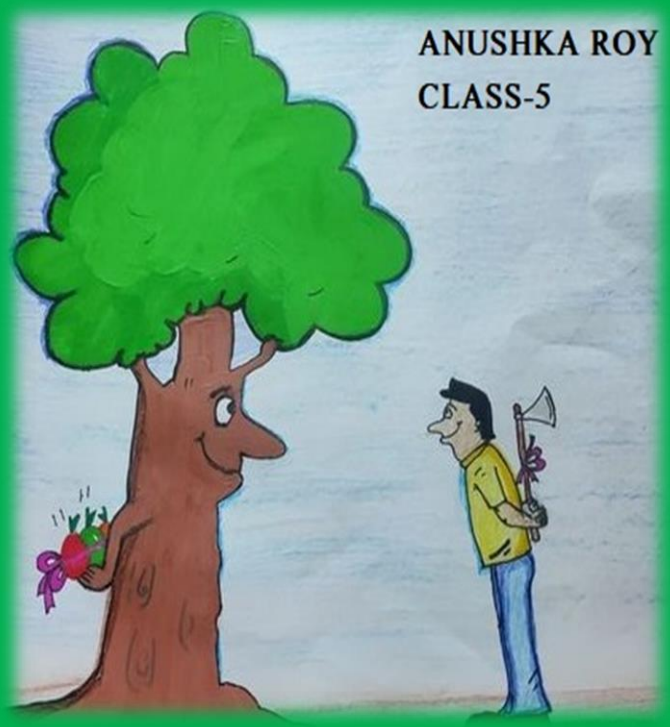

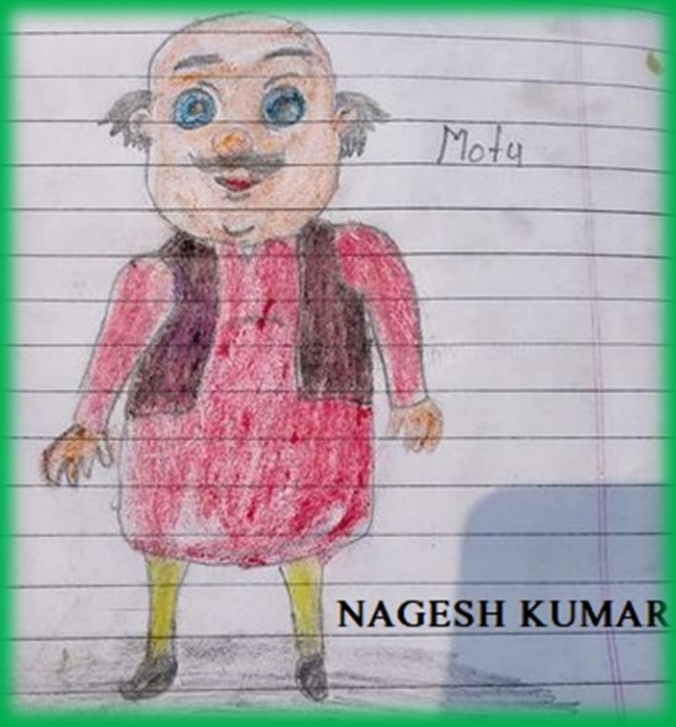

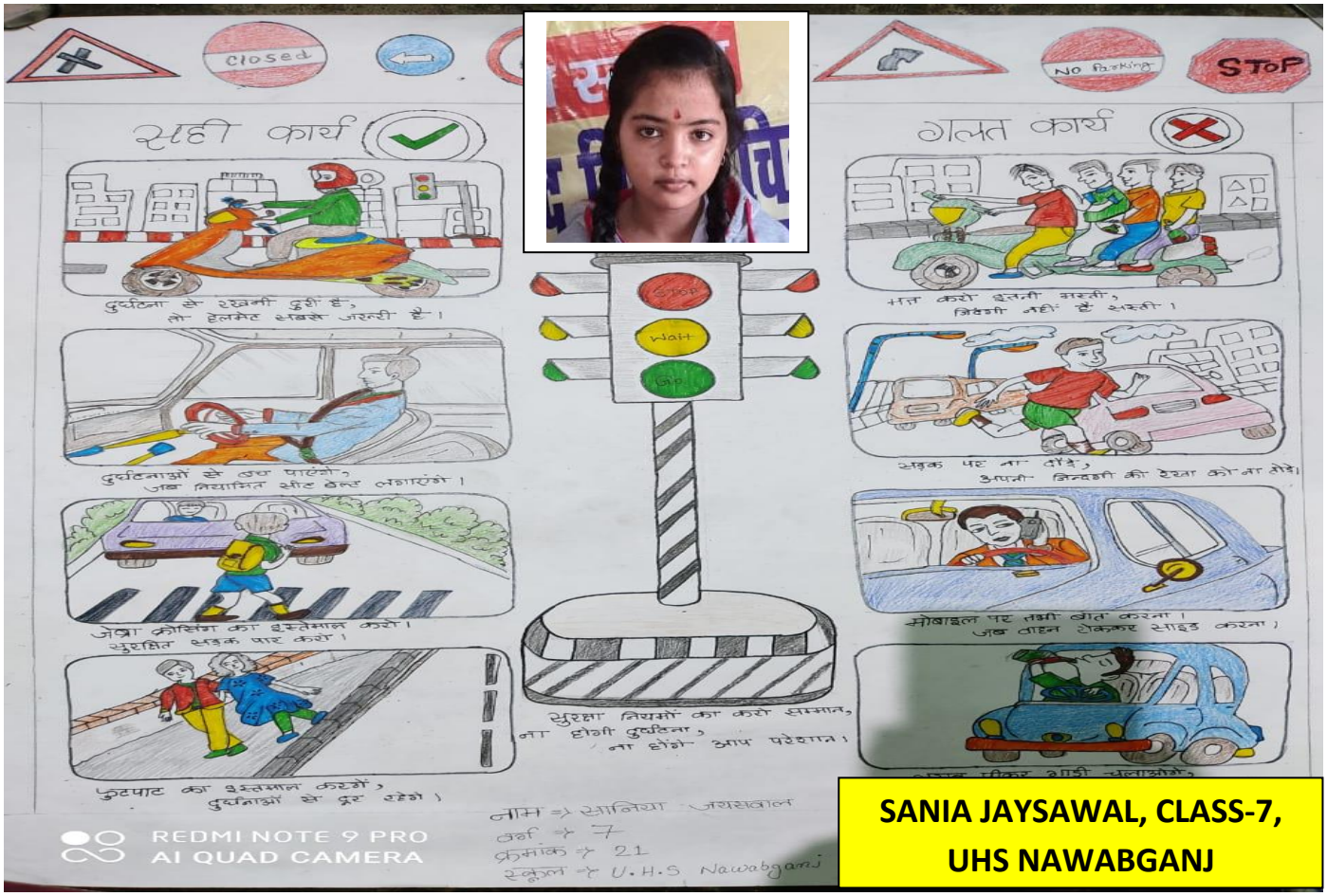

SANIA JAYSAWAL, CLASS-7, UHS NAWABGANJ

तिलकामांझी भारत में ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने वाले पहाड़िया समुदाय के वीर आदिवासी थे। सिंगारसी पहाड़, पाकुड़ के *जबरा पहाड़िया* उर्फ *तिलका मांझी* का जन्म 11 फ़रवरी 1750 ई. में हुआ था। 1771 से 1784 तक उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध लंबी और कभी न समर्पण करने वाली लड़ाई लड़ी और स्थानीय महाजनों-सामंतों व अंग्रेजी शासक की नींद उड़ाए रखा। पहाड़िया लड़ाकों में सरदार रमना अहाड़ी और अमड़ापाड़ा प्रखंड (पाकुड़, संथाल परगना) के आमगाछी पहाड़ निवासी करिया पुजहर और सिंगारसी पहाड़ निवासी जबरा पहाड़िया भारत के आदिविद्रोही हैं।

दुनिया का पहला आदिविद्रोही रोम के पुरखा आदिवासी लड़ाका स्पार्टाकस को माना जाता है। भारत के औपनिवेशिक युद्धों के इतिहास में जबकि पहला आदिविद्रोही होने का श्रेय पहाड़िया आदिम आदिवासी समुदाय के लड़ाकों को जाता हैं जिन्होंने राजमहल, झारखंड की पहाड़ियों पर ब्रितानी हुकूमत से लोहा लिया। इन पहाड़िया लड़ाकों में सबसे लोकप्रिय आदिविद्रोही जबरा या जौराह पहाड़िया उर्फ तिलका मांझी हैं। इन्होंने 1778 ई. में पहाड़िया सरदारों से मिलकर रामगढ़ कैंप पर कब्जा करने वाले अंग्रेजों को खदेड़ कर कैंप को मुक्त कराया। 1784 में जबरा ने क्लीवलैंड को मार डाला।

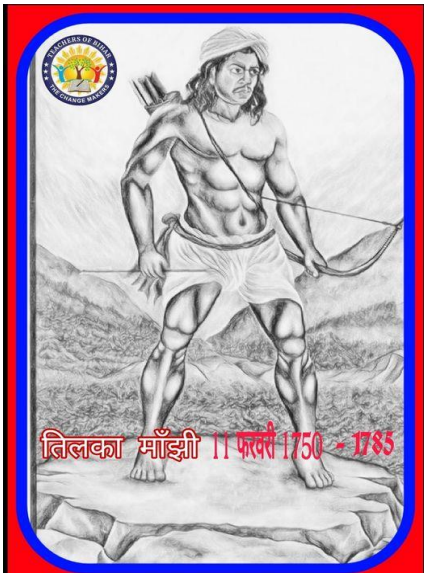

बाद में आयरकुट के नेतृत्व में जबरा की गुरिल्ला सेना पर जबरदस्त हमला हुआ जिसमें कई लड़ाके मारे गए और जबरा को गिरफ्तार कर लिया गया। कहते हैं उन्हें चार घोड़ों में बांधकर घसीटते हुए भागलपुर लाया गया। पर मीलों घसीटे जाने के बावजूद वह पहाड़िया लड़ाका जीवित था। खून में डूबी उसकी देह तब भी गुस्सैल थी और उसकी लाल-लाल आंखें ब्रितानी राज को डरा रही थी। भय से कांपते हुए अंग्रेजों ने तब भागलपुर के चौराहे पर स्थित एक विशाल वटवृक्ष पर सरेआम लटका कर उनकी जान ले ली। हजारों की भीड़ के सामने जबरा पहाड़िया उर्फ तिलका मांझी हंसते-हंसते फांसी पर झूल गए। तारीख थी संभवतः 13 जनवरी 1785

बाद में आजादी के हजारों लड़ाकों ने जबरा पहाड़िया का अनुसरण किया और फांसी पर चढ़ते हुए जो गीत गाए - हांसी-हांसी चढ़बो फांसी ...! वह आज भी हमें इस आदिविद्रोही की याद दिलाते हैं।

TEACHERS OF BIHAR भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रथम क्रांतिकारी को उनके जयंती पर कोटि कोटि नमन करता हैं |

:- Sanjay Bhargav Kumar

राजकीय बुनियादी विद्यालय बखरी, प्रखण्ड- मुरौल, जिला- मुजफ्फरपुर बिहार में पदस्थापित प्राथमिक शिक्षक केशव कुमार के द्वारा बच्चों को दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले खाद्य पदार्थ एवं उसमें पाए जाने वाले पोषक तत्वों से संबंधित जानकारी देने के उद्देश्य से पोषाहार प्रदर्शनी आयोजित की गई। जिसमें अलग-अलग काउंटर बनाकर अनाज, दलहन, तिलहन, मशालें, मौसमी साग-सब्जी, मौसमी फल एवं दूध से निर्मित उत्पादों को प्रदर्शित किया गया।

:- केशव कुमार,
राजकीय बुनियादी विद्यालय बखरी,
प्रखण्ड- मुरौल, जिला- मुजफ्फरपुर

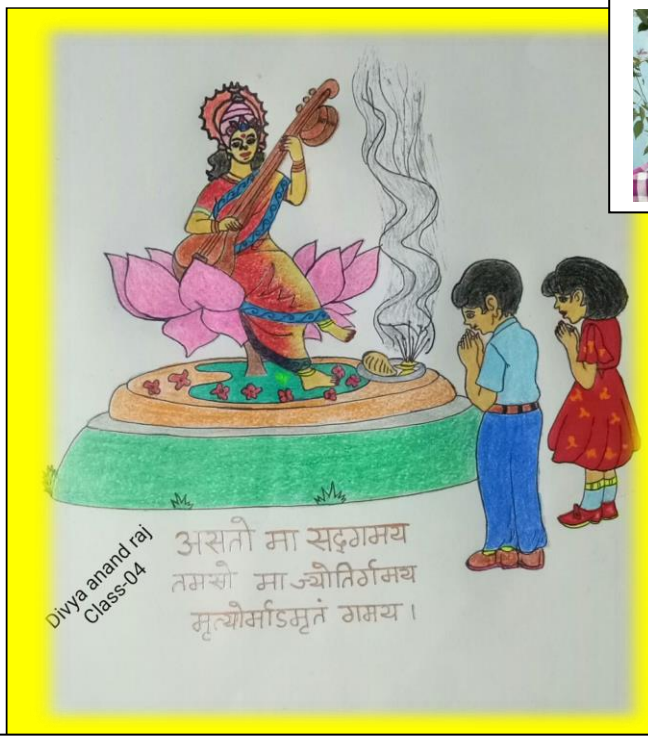

Art by - Shreyansh Gupta, Age - 5 years, Raniganj, Araria

कहानी :- उपकार का बदला

एक गांव में आशीष नाम का एक लड़का रहता था। वह जंगल में जाकर जानवरों को जाल में फंसा कर लाता था और जानवरों को बेच देता था। एक दिन वह शिकार करने जा रहा था। रास्ते में एक खरगोश मिल गया। आशीष बोला कि आज मैं खरगोश को जाल में फंसा लूंगा और बेच दूंगा। खरगोश कोलेकर वह जा ही रहा था कि रास्ते में अमित मिला। अमित बड़ा ही दयालु था उसने सोचा कि खरगोश को जाल से निकालना होगा।जाल से खरगोश को निकालने के लिए जाल को फाड़ना पड़ेगा। आशीष को रास्ते में प्यास लग गई। आशीष पानी पीने एक तालाब पर पहुंचा।तभी अमित ने उसके पॉकेट में ब्लेड था उससे जाल फाड़ कर खरगोश को निकाल दिया। खरगोश ने अमित को धन्यवाद कहा और सोचा कि कभी ना कभी मैं भी अमित की मदद करूंगा। रास्ते में एक बाघ मिला। वह अमित को खाने वाला था। तभी खरगोश ने उस बाघ से कहा कि- "महाराज आप अमित को खा कर क्या करोगे पेट भी नहीं भरेगा और मैं तो छोटा सा जानवर हूं मुझे भी खाने से पेट नहीं भरेगा लेकिन हम दोनों को खा लेने के बाद आपको इस जंगल का सबसे बड़ा बाघ जो है वह आप को खा लेगा "। इसलिए बेहतर तो यह होगा कि पहले आप उस सबसे बड़े बाघ को मार डालें। फिर हम सबको खालें। यह सुनकर बाघ ने सोचा कि वह ठीक ही कह रहा है।पूछा-"कहां है बाघ?" खरगोश ने उसे कुएं के पास ले गया और कुएं में दिखाया तो बाघ ने अपनी परछाई देखकर उसे मारने के लिए कुएं में कूद पड़ा। इससे अमित और खरगोश दोनों की जान बच गई।

नैतिक शिक्षा:- कर भला तो हो भला। **बाल लेखक- शिवम कुमार, वर्ग-6, उत्क्र0म0वि0 सरौनी, बौंसी (बांका)**

प्रियंका कुमारी ब्लैक बोर्ड पर वृक्षारोपण से सम्बंधित चित्र बनाते हुए।

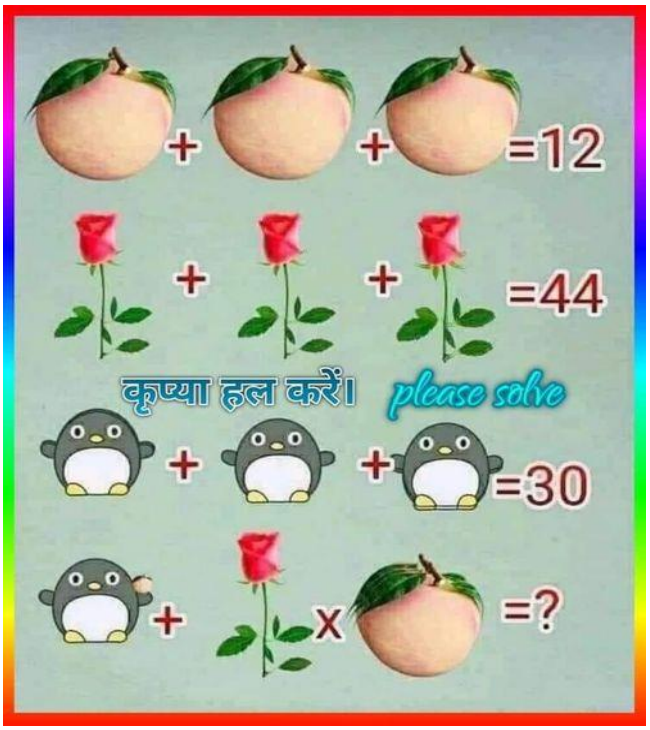

कोडिंग सीखेगा बिहार : इच्छा है तो संभव है!

क्या आपका बच्चे दिन भर मोबाइल पर गेम खेलते है ?
तो क्यों ना उसे गेम बनाना एवं कोडिंग सिखाया जाए ?
वर्षांत में टीचर्स ऑफ बिहार की एक अनूठी पहल। बिहार में सबसे पहले टीओबी के प्लेटफार्म पर प्रत्येक रविवार एवं गुरुवार को ऑनलाइन सीखें कोडिंग।
विशेष जानकारी के लिए नीचे के लिंक को क्लिक करें👇
https://som.teachersofbihar.org/coding-sikhega-bihar/
रेजिस्ट्रेशन के लिए नीचे लिंक को क्लिक करें👇
https://tinyurl.com/Codingbihar

TANNU PRIYA, CLASS-7

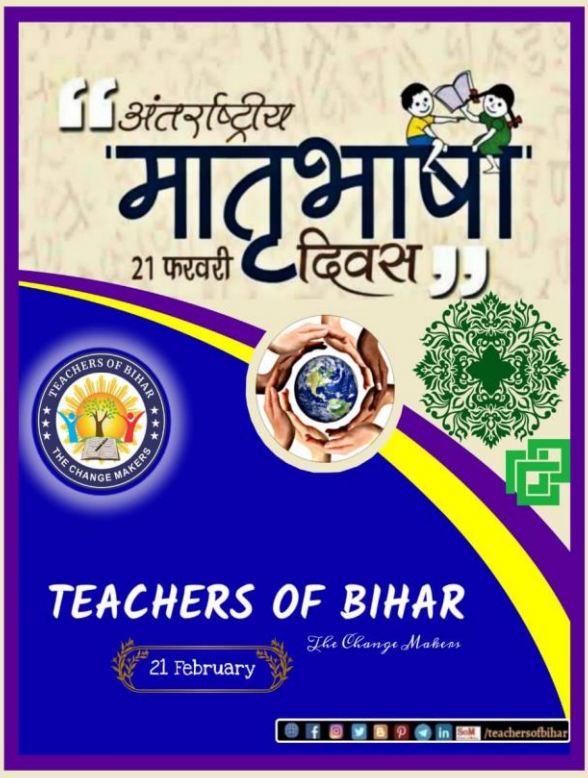

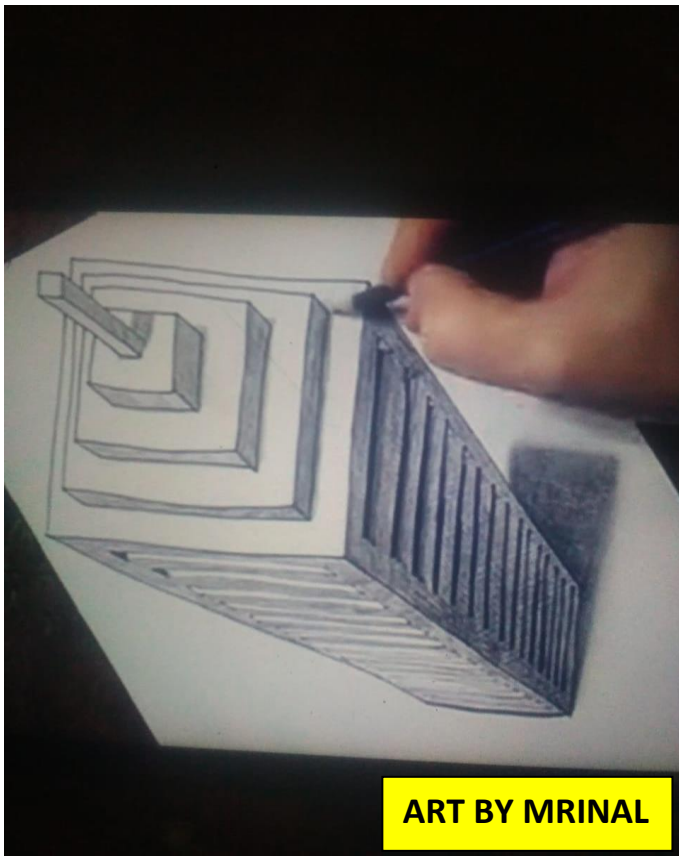

ART BY MRINAL

अखबारों के नजर में हम

इंदू बनी बाल संसद की प्रधान मंत्री और बब्लू शिक्षा मंत्री

गतिविधि के जरिए कोविड-19 से जुड़ा संदेश देते छात्र।

बाल संसद में

अंबा | संवाद सूत्र

इंदू कुमारी को कुटुंबा के कन्या मिडिल स्कूल बाल संसद का प्रधानमंत्री बनाया गया है। मंगलवार को स्कूल परिसर में बाल संसद का पुनर्गठन किया गया।

सर्वसम्मति से आयुष शर्मा को उपप्रधानमंत्री, बब्लू कुमार को शिक्षा मंत्री, अंकिता कुमारी को उप शिक्षा मंत्री, अमृता कुमारी को स्वास्थ्य एवं स्वच्छता मंत्री, राजू कुमार को उप स्वास्थ्य एवं स्वच्छता मंत्री, ब्यूटी कुमारी को जल एवं बागवानी मंत्री, दयानन्द कुमार को उप जल एवं बागवानी मंत्री, धीरज कुमार को पुस्तकालय एवं विज्ञान मंत्री, सृष्टि कुमारी को उप पुस्तकालय एवं विज्ञान मंत्री, रिया कुमारी को खेल एवं सांस्कृतिक मंत्री,कलावती कुमारी को उप खेल एवं सांस्कृतिक मंत्री, सुमित कुमार को आपदा प्रबंधन मंत्री और अंशु कुमारी को उप आपदा एवं प्रबंधन मंत्री बनाया गया है। शिक्षक चन्दन चांदसी को बाल संसद का सुगमकर्ता शिक्षक बनाया गया है। हेडमास्टर चंद्रशेखर प्रसाद साहू ने बताया कि आपदा प्रबंधन मंत्री को कोविड -19 से बचाव के तरीकों के बारे में बच्चों को बताने की जिम्मेवारी सौंपी गई है। इस क्रम में बब्लू कुमार और अमृता कुमारी ने कोविड-19 से बचाव के तरीकों को चार्ट पेपर पर सूचीबद्ध किया। रिया कुमारी, नीलम कुमारी, आयुष शर्मा व सुमित कुमार ने कोविड -19 से सुरक्षा के संदेश पर चित्र बनाए। इन गतिविधियों को विद्यालय की दीवारों पर सजाया गया। उन्होंने कहा कि इससे कोविड-19 के प्रति बच्चों में जागरुकता आएगी।

नरपतगंज में विद्यालय पहुंच कर बीईओ ने किया छात्रों का स्वागत

नरपतगंज के आदर्श मध्य विद्यालय में विद्यालय से बाहर आते छात्र छात्रा ● जागरण

संसू, फुलकाहा (अररिया): नरपतगंज प्रखंड क्षेत्र के सभी मध्य विद्यालय में सोमवार से विभागीय आदेशानुसार वर्ग छह से आठवीं तक के बच्चों के लिए पठन-पाठन की शुरुआत दस माह बाद की गई।

मध्य विद्यालय दरगाहीगंज में प्रधानाध्यापक अवधेश कुमार यादव, मध्य विद्यालय भवानीपुर में प्रधानाध्यापक प्रमोद विराजी,मध्य विद्यालय नवाबगंज में प्रधानाध्यापक बालेश्वर प्रसाद दास, मध्य विद्यालय नुनिया टोला चकला में प्रधानाध्यापक विजेंद्र यादव,कन्या मध्य विद्यालय नरपतगंज में प्रधानाध्यापक जनार्दन यादव सहित सभी मध्य विद्यालय में पठन-पाठन की शुरुआत कोरोना नियमों का पालन करते हुए की गई। आदर्श मध्य विद्यालय नरपतगंज में विद्यालय खुलने के समय से दस मिनट पूर्व हीं प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी सभी बच्चों का स्वागत के लिए पहुंच गए।

हेलमेट नहीं पहनने वालों को छात्राओं ने दिया जागरूकता कार्ड

प्रतिनिधि, कटोरिया

सड़क सुरक्षा माह के तहत कटोरिया-देवघर मुख्य मार्ग पर दर्दमारा बॉर्डर के निकट स्कूली छात्राओं ने जागरूकता अभियान चलाया. इस क्रम में हेलमेट पहनकर बाइक चलाने वालों को धन्यवाद कार्ड व बिना हेलमेट बाइक चलाने वालों को जागरूकता कार्ड दिया गया. मध्य विद्यालय भनरा की सहायक शिक्षिका ज्योति कुमारी के निर्देशन में संचालित इस जागरूकता कार्यक्रम के तहत छात्राओं ने लापरवाह बाइक चालकों को बताया कि आपकी जान बहुत कीमती है, इसलिए हेलमेट पहनकर ही गाड़ी चलायें. बाइक चलाते समय मोबाइल का उपयोग नहीं करें. इस जागरूकता कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं के साथ-साथ शिक्षक-शिक्षिकाओं व चेक पोस्ट पर तैनात पुलिसकर्मियों ने भी मदद की. इस मौके पर शिक्षिका ज्योति कुमारी, शिक्षक मनोज कुमार यादव, सागर भारती, छात्रा खुशी कुमारी, कल्पना कुमारी, सरस्वती कुमारी, दिव्या दर्वे, नेहा, अंजनी, सहेली, सलोनी आदि मौजूद थे. सड़क सुरक्षा माह के तहत विद्यालय परिसर में छात्र-छात्राओं के बीच पेंटिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ.

बाइक सवार को जागरूक करती छात्राएं.

शिक्षा विभाग का प्रयास रंग लायी

अब रेड लाइट एरिया के बच्चें भी सीखेंगे क, ख, ग

सहरसा अमित कुमार

कहते हैं कि दिल में अगर कुछ करने की इच्छा शक्ति हो तो कोई काम मुश्किल नहीं होता। इसे साबित कर दिखाया सदर प्रखंड कहरा के प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी संजय कुमार ने। जिसकी जितनी चर्चा की जाय कम ही होगा। हुआ यूं कि बिहार राज्य मानवाधिकार आयोग ने प्रारंभिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान सहरसा से जिले के सभी रेड लाइट एरिया में रह रहे बच्चों की पहचान कर 6-14 आयु वर्ग के बच्चों को चिन्हित करने के साथ विद्यालय में अनामांकित होने की स्थिति में उसका नामांकन उम्र सापेक्ष कक्षा में करवाने का निर्देश दिया था। इसी कड़ी में प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी संजय कुमार ने अपनी तत्परता से एक टीम का गठन कर शहर से सटे भारतीय नगर स्थित रेड लाइट एरिया में ना सिर्फ सर्वेक्षण

करवाया, वल्कि शनिवार को 48 बच्चें का नामांकन भी स्थानीय नव प्राथमिक विद्यालय में करवाने में सफल रहे। जिसमें 20 बालक एवं 28 बालिका शामिल हैं। प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी ने बताया कि पत्र देखते ही कोई भी शिक्षक या फिर साधन सेवी इस इलाके में जाने को तैयार नहीं हो रहे थे। फिर अपने मौजूदगी में इस कार्य को करने को ठानी। उन्होंने कहा कि मानवता के नाते स्लम बस्तियों के बच्चें भी अगर समाज की मुख्य धारा से जुड़ कर शिक्षा ग्रहण करें तो इससे बड़ी बात और क्या हो सकता है। फिर उन्होंने प्रखंड साधन सेवी अमित कुमार, हेम शंकर सिंह, बिजय कुमार, शिक्षक सुदर्शन कुमार के साथ इस बस्ती में पहुंच कर नजदीक के विद्यालय के प्रधानाध्यापक प्रभात कुमार एवं शिक्षक सरोज कुमार को साथ लेकर सर्वेक्षण करते हुए 48 बच्चे का नामांकन अपनी उपस्थिति में करवाया।

इस मौके पर नामांकित बच्चों को कांपी, कलम का भी वितरण किया। बच्चें काफी खुश नजर आ रहे थे। हो भी क्यों नहीं, सड़क पर खेलने वाले बच्चें विद्यालय में नजर आ रहे थे। बच्चें का नामांकन विद्यालय में करवाने के लिए उनके माता, पिता, अभिभावक भी साथ आए। 10 वर्षीय बच्ची पीहू प्रवीण ने पूछने पर बताती है कि पढ़ लिख कर अफसर बनना चाहती है। वहीं अहाना, जुनी, इशा, अमन, उम्मी आयत, कोमल प्रवीण आदि बच्चों ने बताया कि वह भी बड़ा आदमी बनना चाहता है। अभिभावक कुशा खातून, राईशा खातून, सोनी, मो जब्बार आदि ने बताया कि हमारे बच्चें पहले घर में ही पढ़ता था, अब स्कूल में पढ़ेगी। इससे खुशी की बात क्या होगी। एक सवाल के जवाब में मो हैदर अली, नौशाद, शाहिना खातून ने बताया कि ऐसी पहल पहले कभी किसी के द्वारा नहीं किया गया था। नहीं तो हमारे बच्चें भी पढ़ लिख कर बड़ा आदमी बन सकता है। वहीं प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी ने सरकार से मिलने वाले सुविधा के बारे में भी स्थानीय लोगों को बताया।

योजनाओं को वीडियो में पिरो रहीं सुमोना

नेक पहल 2

भागलपुर | वरीय संवाददाता

सरकारी स्कूलों में न सिर्फ किताबों से पढ़ाया जा रहा है बल्कि उसकी कविताओं, कहानियों और जागरूकता संबंधी जानकारियों को वीडियो से पढ़ाया जा रहा है और इनको वीडियो में पिरोने का काम करती हैं बिहपुर प्रखंड संसाधन केन्द की बीआरपी (प्रखंड साधन सेवी) सुमोना रिंकू घोष। दूरदर्शन के माध्यम से भी इनके वीडियो से बच्चों को पढ़ाया जा रहा है। यह वीडियो सुमोना खुद अपने घर पर मोबाइल और कंप्यूटर की सहायता से बनाती हैं।

जागरूकता

- सुमोना रिंकू घोष बिहपुर में प्रखंड साधन सेवी के पद पर हैं कार्यरत
- किताबों की कविताओं व कहानियों का बनाती है वीडियो एनिमेशन

खुद बनाए वीडियो के बारे में बतातीं सुमोना रिंकू घोष।

> वीडियो बनाकर अच्छा काम कर रही हैं सुमोना। इससे बच्चों को भी लाभ मिल रहा है। इसे बच्चे मोबाइल के माध्यम से देखकर लाभ उठा सकते हैं।
>
> -संजय कुमार, जिला शिक्षा पदाधिकारी, भागलपुर

भागलपुर की बरारी निवासी सुमोना ड्यूटी के दौरान जैसे ही मौका मिलता है वह कोर्स की पुस्तकों से कविताओं या कहानियों का एनिमेटेड वीडियो बनाती हैं। वे यह वीडियो भागलपुर के स्कूल के अधिकारियों, प्रधानाचार्यों और शिक्षकों के ग्रुप में डाल देती हैं। इसके अलावा वह फेसबुक पर, शिक्षकों की संस्था टीचर्स ऑफ बिहार पर भी डाल देती हैं, ताकि ज्यादा से ज्यादा स्कूलों के बच्चों को इन एनिमेटेड वीडियो से पढ़ाया जाये।

दूरदर्शन पर चलाये जा रहे इनके वीडियोः उन्होंने बताया कि राज्य सरकार की आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा जागरूकता संबंधी इनके कई वीडियो को मांग कर दूरदर्शन पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम 'मेरा दूरदर्शन मेरा विद्यालय' में चलाया जाता है।

पिता का दर्द देखा नहीं गया, तो बेटी ने बना दिया वेजीटेबल पिकर

- आसपास के किसान भी मनीषा से खरीद रहे वेजीटेबल पीकर

ऋषव मिश्रा कृष्णा, नवगछिया

अपने किसान पिता का दर्द देखा नहीं गया तो नवगछिया अनुमंडल के रंगरा प्रखंड के सधुवा दियारा की सातवीं कक्षा की छात्रा मनीषा ने उनके लिए वेजीटेबल पिकर का ही आविष्कार कर दिया. मनीषा के पिता उत्तम सिंह एक छोटे किसान हैं. वह पशुपालन के साथ सब्जियों की खेती करते हैं. बैंगन तोड़ने के दौरान अक्सर उनके हाथों में जख्म हो जाते थे, जो धीरे-धीरे घाव का रूप ले लेते थे. इससे वह बैंगन तोड़ने में असमर्थ हो गये. यह देख मनीषा ने चार माह के अथक प्रयास से उनके लिए वेजीटेबल पिकर उपकरण बना दिया. इस उपकरण का आसपास के किसान भी इस्तेमाल कर रहे हैं. मनीषा इस यंत्र को सब्जी तोड़ने वाली मशीन कहती है. लेकिन उसके स्कूल टीचर ने इस मशीन को नाम दिया है वेजीटेबल पिकर.

क्या है वेजिटेबल पिकर : कुछ सब्जियों को तोड़ने में किसानों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है. उदाहरण स्वरूप बैंगन निरंतर तोड़ने के क्रम में हाथों के जख्मी हो जाने का डर रहता है. साथ ही शरीर में बैंगन के पत्ते या तना सटने से एलर्जी या खुजली होने की आशंका रहती है. किसान सब्जियों को तोड़ने के लिए ग्लव्स की व्यवस्था नहीं कर पाते हैं. कुछ पौधे इतने बड़े और घने होते हैं कि हाथों से तोड़ना मुश्किल होता है. खेत में गिरी सड़ी गली सब्जियों को चुनने में संक्रमण का भी खतरा रहता है. सब्जी तोड़ने में प्रयुक्त यंत्र को वेजीटेबल पीकर का नाम दिया गया है. मनीषा ने प्लास्टिक के डंडे में स्प्रिंग, कैंची और लोहे को अलग-अलग आकार में कटवाकर इस यंत्र में सेट किया है. डंडे में हाथ के पास दो बटन है. एक बटन दबाते ही यह यंत्र को पौधे में लगी सब्जी को काटकर पकड़ लेता है और दूसरा बटन दबाने पर यंत्र सब्जी को छोड़ देता है. इस यंत्र से कई तरह की सब्जियों और फलों की तोड़ाई की जा सकती है.

मनीषा से यंत्र बनवा रहे हैं आसपास के किसान : मनीषा ने कहा कि एक यंत्र बनाने में 250 से 300 रुपये की लागत आती है. गांव के जो भी किसान उसके पास आते हैं वह उसे लागत खर्च में ही मशीन बना कर दे देती है.

बेटी ने बनाया उपकरण तो खुशी से नम हो गयी पिता की आंखें : मनीषा के पिता उत्तम सिंह ने कहा कि वह लगातार चार माह से यंत्र बनाने का प्रयास कर रही थी. अपने भाई से सामान भी मंगवा रही थी. वह जब मनीषा को यह सब करते देखते तो गुस्सा आ जाता था, लेकिन एक दिन जब बैंगन के खेत में मनीषा ने अपने यंत्र से बैंगन तोड़ना शुरू किया और उसने कहा पापा यह आपके लिए तो यह देख मेरी आंखों में खुशी के आंसू आ गये. मनीष छह भाई-बहनों में तीसरे नंबर पर है. मनीषा की मां सोनम देवी गृहणी है. पिता मुख्य रूप से बैंगन की खेती करते हैं और खुद कुरसेला सब्जी हाट में बैंगन बेचने जाते हैं.

अपने बनाये वेजीटेबल पिकर से बैंगन तोड़ती मनीषा.

माता, पिता व भाई के साथ मनीषा.

इंस्पायर अवार्ड के लिए जिला स्तर पर चयनित हो चुकी है मनीषा

मनीषा का चयन इंस्पायर अवार्ड के पहले चरण में हो चुका है. वह अपने आविष्कार के बल पर जिला लेवल तक पहुंच गयी है. सधुवा दियारा स्थित मध्य विद्यालय चापर दियारा के शिक्षक और मनीषा के वर्क शिक्षक राकेश रोशन ने कहा कि शुरू में जब मनीषा ने इस यंत्र को इंस्पायर अवार्ड में शामिल करने की बात कही थी तो वह समझ नहीं पाये थे लेकिन जब उन्होंने यंत्र देखा तो वाकई यह एक नया आविष्कार था. रंगरा चौक प्रखंड के वरीय साधनसेवी मुकेश मंडल ने कहा कि मनीषा से काफी आशाएं है.

प्रमुख करेंगे सम्मानित : रंगरा चौक प्रखंड के प्रखंड प्रमुख संजीव कुमार यादव उर्फ मोती यादव ने कहा कि मनीषा ने उक्त यंत्र का आविष्कार कर प्रखंड का नाम रौशन किया है. जल्द ही मनीषा को सम्मानित किया जायेगा.

5:30 PM

आईसीटी अवार्ड के लिए बिहार के चार शिक्षक हुए नामित

भागलपुर | प्रतीक कुमार

स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए शिक्षा में नवाचारों के लिए मानव संसाधान विभाग ने बिहार के चार शिक्षकों को राष्ट्रीय आईसीटी (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) अवार्ड 2019 के लिए नामित किया है। इनमें भागलपुर के रहने वाले दो, एक सुपौल और एक दरभंगा के स्कूल में कार्यरत हैं।

इसके लिए 31 अक्टूबर 2020 को ऑनलाइन आवेदन करने का अंतिम समय था। इसमें बिहार के चार शिक्षकों का भी चयन केन्द्रीय स्तर पर किया गया है। केन्द्रीय ज्यूरी के समक्ष पांच से नौ फरवरी तक इन नामितों का जूम एप पर ऑनलाइन साक्षात्कार होगा। इसके बाद इस अवार्ड के लिए अंतिम रूप से चयनित किया जायेगा। 2017 के लिए देश भर के 43 शिक्षकों को अंतिम रूप से पुरस्कृत किया गया था।

अवार्ड 2019

- सूचना एवं संचार से शिक्षा में बिहार ने बढ़ाया तेजी से कदम
- भागलपुर के दो शिक्षकों को नामित किया गया है

ये चार शिक्षक हुए हैं नामित

पप्पू हरिजन व्याख्याता, प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय हवेली खड़गपुर में व्याख्याता, (पूर्व प्रधानाचार्य, प्रो. मध्य विद्यालय कुलहरिया, अमरपुर), प्रेम शंकर (एसएस, गर्ल्स हाईस्कूल, नाथनगर, भागलपुर), सौरव सुमन (प्रोजेक्ट गर्ल्स हाईस्कूल त्रिवेणीगंज सुपौल), रवि रौशन कुमार (उच्चतर हाई स्कूल माधोपट्टी, केवटी, दरभंगा)।

राष्ट्रपति पदक प्राप्त और प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय हवेली खड़गपुर में व्याख्याता पप्पू हरिजन ने बताया कि यह पहली बार है जो बिहार के शिक्षकों को इस अवार्ड के लिए नामित किया गया है। इनमें से किसी का भी चयन होना बड़ी उपलब्धि होगी। एसएस बालिक इंटर स्कूल नाथनगर के प्रेमशंकर ने बताया कि 2014 में जब स्कूल में मनोविज्ञान विषय के लिए नियुक्त हुए थे तो स्कूल में एक भी कंप्यूटर नहीं था। बाद में एक बैंक से दान में मिला तो सभी बच्चों का डाटा बेस तैयार किया। इसके बाद 2019 गूगल क्लासरूम शुरू किया था और कोरोना के कारण हुए लॉकडाउन के दौरान सभी शिक्षकों के लिए गूगल क्लासरूम बनाया। परीक्षा प्रणाली में भी सुधार किया। सुपौल के सौरभ सुमन प्रदेश भर के बच्चों को मुफ्त में ऑनलाइन कोडिंग सिखा रहे हैं। वे लोग टीचर्स ऑफ बिहार के भी सदस्य हैं।

शिक्षकों ने आगे बढ़कर किया प्रयास: पप्पू हरिजन ने बताया कि शिक्षा में सूचना एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए उन्होंने 2014-15 से ही प्रयास शुरू कर दिया था। उस समय वह प्रो. मध्य विद्यालय कुलहरिया, अमरपुर बांका में कार्यरत थे।

एक समय था जब विगत वर्षों में बिहार राज्य से आईसीटी पुरस्कार हेतु किसी भी शिक्षक का नाम नामांकित नही होता था। पर जनाब यह नया बिहार है। इस वर्ष 2018-19 के राष्ट्रीय आईसीटी पुरस्कार हेतु बिहार राज्य से चार शिक्षकों के नाम नामांकित किए गए हैं। ये हैं पप्पू हरिजन (पूर्व प्रधानाचार्य, म.वि. कुल्हारिया- अमरपुर), प्रेम शंकर (एम्.एस. गर्ल्स हाईस्कूल, नाथनगर- भागलपुर), सौरभ सुमन (प्रोजेक्ट गर्ल्स हाईस्कूल त्रिवेणीगंज-सुपौल) और रवि रौशन कुमार, (उच्चतर हाईस्कूल माधोपट्टी-दरभंगा) | इन चारों शिक्षकों को फरवरी में शिक्षा मंत्रालय नई दिल्ली के समक्ष ऑनलाइन प्रेजेंटेशन देना है। हम सभी को पूर्ण विश्वास है कि इस आईसीटी अवॉर्ड्स में बिहार बेहतरीन प्रदर्शन करेगा। टीचर्स ऑफ़ बिहार परिवार के इन चारों शिक्षकों को अग्रिम शुभकामनाएं 💐

#ICTAwards #NationalICTawards #ICT #TeachersofBihar #ictawards

रोचक तथ्य

मानस बल झील

मानसबल झील जम्मू व कश्मीर राज्य में श्रीनगर से उत्तर में स्थित एक पर्वतीय झील है। इसके किनारे तीन बस्तियाँ हैं - जरोकबल, कोंडाबल और गान्दरबल। इसके पानी के किनारे कमल के फूल उगे हुए हैं और 13 मीटर (43 फ़ुट) की अधिकतम गहराई के साथ यह जम्मू-कश्मीर की सबसे गहरी झील मानी जाती है। माना जाता है कि मानसबल झील का नाम तिब्बत में स्थित पवित्र मानसरोवर झील पर पड़ा है।

पहला ट्वीट 21 मार्च 2006 को जैक डोरसी ने किया और अपलोड होने वाला पहला यूट्यूब वीडियो शनिवार 23 अप्रैल 2005, 8:27 pm पर जवाहर करीम द्वारा "मीट एट चिड़ियाघर" था।

क्या आपको मालूम है कि फरवरी के दूसरे सप्ताह में पूरे विश्व में सुरक्षित इंटरनेट दिवस मनाया जाता है?

प्रत्येक वर्ष फरवरी के दूसरे सप्ताह में सुरक्षित और बेहतर इंटरनेट प्रदान करने के उद्देश्य से इंटरनेट दिवस मनाया जाता है, जहाँ प्रत्येक उपयोगकर्ता जिम्मेदारी से और बिना अपना डेटा लीक किए इंटरनेट का उपयोग करता है। यह दिन आज दुनिया भर के लगभग 15 देशों में मनाया जा रहा है। इस वर्ष सुरक्षित इंटरनेट दिवस के 18 वें संस्करण को दुनिया भर में होने वाली कार्रवाइयों के साथ चिह्नित किया गया है। साइबरबुलिंग से लेकर सोशल नेटवर्किंग से लेकर डिजिटल पहचान तक, हर साल सुरक्षित इंटरनेट दिवस का उद्देश्य उभरते ऑनलाइन मुद्दों और मौजूदा चिंताओं के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

सुरक्षित इंटरनेट दिवस 2021: थीम

इस वर्ष, विषय "एक साथ एक बेहतर इंटरनेट के लिए" है। सुरक्षित इंटरनेट दिवस हमें यह याद दिलाने में मदद करता है कि इंटरनेट सुरक्षा एक ऐसी चीज है जो निरंतर सतर्कता की मांग करती है। यह हमें यह भी याद दिलाता है कि अगर हम उचित सावधानी नहीं बरतेंगे तो इंटरनेट पर बहुत सारी बुरी चीजें हो सकती हैं।

ऑनलाइन सुरक्षित रहने के टिप्स:

- मजबूत पासवर्ड चुनें।
- सार्वजनिक वाई-फाई पर ब्राउज़ न करें।
- असुरक्षित ई-मेल को ना खोलें।
- अपनी व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित रखें।
- स्कैमर्स की रिपोर्ट करें।

ART BY PRABHJOT SODHI, CLASS-5

ART BY ANUPRIYA

11फरवरी - विज्ञान में महिलाओं एवं बालिकाओं का अंतरराष्ट्रीय दिवस

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 22 दिसंबर, 2015 को इस दिवस को मनाने की घोषणा की थी। इस दिन विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिलाओं और लड़कियों को याद किया जाता है। इसका उद्देश्य है विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों को बढ़ावा देना | कुछ महिला वैज्ञानिक हैं जो विभिन्न संस्थानों में नेतृत्व की भूमिका संभालकर देश का मान बढ़ा रही हैं:-

रितु करिधल, वरिष्ठ वैज्ञानिक, इसरो

इसरो में वरिष्ठ वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत रितु करिदल चंद्रयान -2 की मिशन निदेशक रही हैं। वह मार्स ऑर्बिटर मिशन की डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर भी रही हैं। करिधल ने चंद्रयान-2 की शुरुआत करने वाली महिला के रूप में प्रसिद्धि पाई। भारतीय विज्ञान संस्थान से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में मास्टर डिग्री करने वाली करिधल भारत के मंगल मिशन को डिजाइन करने के लिए काफी सराहना पा चुकीं हैं। 2007 में इसरो का यंग साइंटिस्ट अवार्ड जीत चुकीं हैं|

नंदिनी हरिनाथ, रॉकेट वैज्ञानिक, इसरो

बेंगलुरु में इसरो सैटेलाइट सेंटर के एक रॉकेट वैज्ञानिक, नंदिनी ने 20 वर्ष पहले यहां अपनी पहली नौकरी शुरू की थी। इस दौरान वह 14 मिशनों पर काम कर चुकीं हैं। वह मंगलयान मिशन के लिए डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर थी। नंदिनी का विज्ञान के प्रति झुकाव का पहला कारण लोकप्रिय टीवी कार्यक्रम स्टार ट्रेक था। शिक्षकों एवं इंजीनियरों के परिवार से होने के कारण विज्ञान के प्रति उनका झुकाव रहा।

डॉ. गगनदीप कांग, एफआरएस

रॉयल सोसायटी ऑफ लंदन और अमेरिकन एकेडमी ऑफ माइक्रोबॉयोलॉजी की फेलो बनने वाली पहली भारतीय महिला डॉ. कांग, ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट की कार्यकारी निदेशक हैं। देश में डायरिया रोकने के लिए भारतीय बच्चों के हिसाब से रोटावायरस वैक्सीन विकसित करने का श्रेय डॉ. गगनदीप कांग को जाता है।

डॉ. टेसी थॉमस, विशिष्ट वैज्ञानिक, डीआरडीओ

डीआरडीओ में वैमानिकी प्रणाली की महानिदेशक डॉ. टेसी थॉमस 1988 में रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला हैदराबाद से जुड़ीं। लंबी दूरी की मिसाइल प्रणालियों के लिए गाइडेड योजना तैयार की है, जिसका उपयोग सभी अग्नि मिसाइलों में किया जाता है। उन्हें 2001 में अग्नि आत्मनिर्भरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. चंद्रिमा शाह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी

डॉ. चंद्रिमा शाह को भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की पहली महिला अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। चंद्रिमा राष्ट्रीय इम्यूनोलोजी संस्थान, दिल्ली में प्रोफेसर ऑफ एमिनेंस हैं इन्होंने भ्रूण प्रत्यारोपण के तंत्र पर काफी काम किया है।

डॉ. अनुराधा टीके, वरिष्ठ वैज्ञानिक, इसरो

1982 से इसरो को सेवाएं दे रही हैं और सबसे वरिष्ठ महिला वैज्ञानिक हैं। उन्होंने इसरो संचार उपग्रह जीसैट-12 को विकसित करने और लांच करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अनुराधा ने सितंबर 2012 में जीसैट -10 के लॉन्च का नेतृत्व किया। इसरो में परियोजना निदेशक के रूप में उन्होंने जीसैट-9, जीसैट-17 और जीसैट-18 संचार उपग्रहों के प्रक्षेपण की सफलता में योगदान रहा।

डॉ. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्टैड्स

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान (सीएसआईआर-निस्टैड्स), नई दिल्ली की निदेशक डॉ. रंजना अग्रवाल ने कैंब्रिज विश्वविद्यालय से इरिथ्रोमाइसिन बायोसिन्थेसिस पर दो वर्षीय शोध किया। कैंब्रिज में कॉमनवेल्थ फेलो, ट्रिनिटी कॉलेज डबलिन, आयरलैंड और यूनिवर्सिटी ऑफ ट्रिस्टे इटली में कार्य किया है। ये ग्रामीण महिलाओं के कौशल विकास उन्नयन में योगदान दे रही हैं।

डॉ. एन. कालीसल्वी, निदेशक, सीएसआईआर-सीईसीआरआई

ये 25 से अधिक वर्षों के अनुसंधान कार्य मुख्य रूप से विद्युत ऊर्जा प्रणालियों पर है। डॉ. कालीसल्वी अब तक 125 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत कर चुकी हैं और उनके पास छह पेटेंट हैं। वह कोरिया के ब्रेन पूल फेलोशिप और मोस्ट इंस्पायरिंग वुमन साइंटिस्ट अवार्ड से नवाजी जा चुकी हैं |

Divya

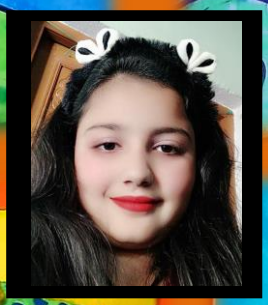

Peacock
Art by Divya

Duck

Think Positive
Sakshi Kumari

SAKSHI

Sakshi Kumari

मंडे पॉजिटिव ■ जिला स्तर पर पुरस्कार देने के लिए मॉडल की गई चयनित, इसकी लागत 300 रुपए

सिंघिया हिबन मध्य विद्यालय के बच्चों ने बनाई सोलर लाइट सूर्यास्त होने पर जलती है और सूर्योदय होने पर बंद होती है

भास्कर न्यूज | बंजरिया

सिंघिया हिबन मध्य विद्यालय के आठवीं के छात्रों ने सेंसर लगा सोलर लाइट का मॉडल बनाया है। इसे बंद नहीं करना पड़ता है। सूर्यास्त के समय यह खुद जल जाती है और सूर्योदय होते ही बंद हो जाती है। बच्चों ने इसे बहुत मामूली खर्च में बनाया है। इसके बनाने में बच्चों लकड़ी के कबाड़ व कार्ड बोर्ड का इस्तेमाल किया है। इसकी लागत बच्चों को महज 300 रुपए बताई है। बच्चों के बनाए मॉडल के लिए जिला स्तर पर विद्यालय को पुरस्कार के लिए चयन किया गया है। जानकारी देते हुए विद्यालय के प्रधानाध्यापक विजय उपाध्याय ने बताया कि विद्यालय के आठवीं क्लास के बच्चों ने उनसे स्ट्रीट लाइट बनाने की बात कही। उन्होंने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए जरूरी सामान उपलब्ध कराने को लेकर मदद की। जिसके बाद उत्साही छात्रों ने सेंसर लगा सोलर लाइट बना दी।

पहले भी कबाड़ के सामान से छात्र ने बनाया है जेसीबी

पूर्व में भी इस विद्यालय के छात्र रौशन कुमार ने कचरे व कबाड़ के सामान से जेसीबी बना चुका है। उसे कई पुरस्कार भी मिला था। रौशन कुमार राज्य स्तर पर भी चित्रकारी के लिए पुरस्कार ले चुका है। इस बार भी जिलास्तर पर बच्चो के उत्कृष्ट कार्यों के लिए विद्यालय को पुरस्कार के लिए चयन किया गया है।

10 रुपए की एलइडी खरीदी व कबाड़ से कार्ड बोर्ड लिया

बच्चों ने बताया कि इसके लिए 10 रुपए का एलइडी खरीदी, कबाड़ से कार्ड बोर्ड लिया। खिलौने के चार वोल्ट की बैट्री व सोलर प्लेट लिया। सेंसर नहीं मिलने की वजह से उसे उधार लाया गया। इसके बाद सोलर स्ट्रीट लाइट तैयार कर ली गई। महज 300 में इसका मॉडल बनाया जा सकता है। बच्चों ने बताया कि वे तीन दिन में शिक्षकों के सहयोग से बना पाए है। जो काफी रोशनी भी दे रही है। इसे जलाने के खिलौना का बैट्री व उसका सेंसर लगाया गया है। इस सोलर लाइट में 10 एलइडी लगा है। जो चार चार वोल्ट की बैट्री के सोलर से चार्ज होने पर चलता है। साथ ही सेंसर इसे स्वचालित रूप से ऑन ऑफ करता है।

समाचार स्रोत :- केशव कु. कश्यप, डिस्ट्रिक्ट मेंटर,टीचर्स ऑफ बिहार, पूर्वी चंपारण

ताड़ के पत्ते से बनी गुलाब के फूल :- इंदु कुमारी, वर्ग-5

कहानी – 'लालच'

एक खेत में बहुत सारे मकई के पौधे थे।वहां पर रोज बहुत सारे तोते बैठते थे। उसी के बगल के गांव न नाम का आदमी था। वह बहुत लालची था। उसने सोचा कि क्यों ना तोते को जाल बिछाकर फंसाया जाए। वह पहला दिन जाल बिछाया तो उसमें मात्र एक तोता फंसा। उसके पास मात्र एक ही पिंजरा था। वह बहुत छोटा था। दूसरे दिन उसने मकई पर जाल बिछाया तो सारे तोते ने यह फैसला किया कि हम लोग मकई के डाली पर ठेंगे और बहुत जोर से जोर-जोर से चिल्लाने लगेंगे तभी लालची शिकारी हम सब को जाल में फंसाने के लालच में मेरे एक दोस्त को पिंजरे से निकाल देगा तभी हम लोग सभी उड़ जाएंगे। हुआ भी वही।उन सभी तोते ने जो सोचा था वही किया और लालची शिकारी ने यह सोचा कि एक तोते से तो अच्छा है कि इसे भगाकर में बहुत सारे तोते को पिंजरे में बंद कर दूं और बेच दूं तो बहुत सारे रुपए मुझे मिल जाएंगे। यह सोचकर उसने एक तोते को पिंजरा खोल कर उड़ा दिया और सभी तोते के लिए पिंजरा खुला छोड़ दिया। सभी तोते अपने मित्र को लेकर खुशी-खुशी दूर आकाश में उड़ गए।

नैतिक शिक्षा :- इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें कभी लालच नहीं करना चाहिए, नहीं तो मिले हुए चीज़ भी खो जाते हैं।

बाल लेखक- अमित कुमार, वर्ग-6, उ. म. वि. सरौनी, बौंसी बांका

बूझो तो जानें

1. मैं एक तना हूं ऐसा

लगता फल के जैसा

मुझे खाओ स्टार्च पाओ

अब तो मेरा नाम बताओ

आलू

2. मैं हूं एक पोषक तत्व

तेल घी में रहता हूं

जब तुम करते कोई व्रत

मैं ही काम आता हूं।

वसा

3. वह कौन सा पुत्र है जिसका कोई पिता नहीं?

ब्रह्मपुत्र

अतीश दीपांकर

क्या आप जानते हैं ?

- वर्तमान में भारत में कुल २८ राज्य एवं ९ केन्द्रशासित प्रदेश हैं। इससे पूर्व भारत में २८ राज्य एवं ७ केन्द्र शासित प्रदेश थे।

- ५ अगस्त, २०१९ को जम्मू और कश्मीर के विशेष राज्य का दर्जा समाप्त करके उसे दो अलग-अलग केन्द्रशासित प्रदेश बनाया गया, जिसमें जम्मू और कश्मीर को दिल्ली के समान विधानसभा सहित केन्द्रशासित राज्य का दर्जा दिया गया और एक नया केन्द्रशासित राज्य लद्दाख (जम्मू और कश्मीर से अलग करके) बनाया गया। ये दोनों केन्द्रशासित प्रदेश 31 अक्टूबर, २०१९ से पूरी तरह से अस्तित्व में आ गये। इस प्रकार भारत में कुल २८ राज्य एवं ९ केन्द्रशासित प्रदेश हैं।

- भारत के राज्यों में क्षेत्रफल की दृष्टि से ५ सबसे बड़े राज्य क्रमशः राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश तथा आन्ध्रप्रदेश हैं। तेलंगाना राज्य के गठन से पूर्व आन्ध्रप्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का चैथा सबसे बड़ा राज्य था।

- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे छोटा राज्य गोवा हैं।
- जनसंख्या की दृष्टि से भारत का सबसे छोटा राज्य सिक्किम हैं।
- राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों में क्षेत्रफल की दृष्टी से भारत का सबसे छोटा राज्य लक्षद्वीप हैं।

- सबसे ज्यादा राज्यों से सीमा बनाने वाला भारत का राज्य उत्तर प्रदेश हैं। यह भारत के आठ राज्यों एवं एक केन्द्रशासित प्रदेश के साथ सीमा बनाता हैं, जो निम्नलिखित हैं– उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्यपदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार, एवं केन्द्रशासित प्रदेश नई दिल्ली के साथ इसकी सीमा हैं।

किसी बच्चे ने सुंदर अक्षरों में सामान्य ज्ञान लिखा है जो कि एक प्रेरणा है।
संकलन :- रूबी कमारी, सहायक शिक्षिका, UMS सरौनी ,बौंसी (बाँका)

पुतुल कुमारी
वर्ग-7

TEACHERS OF BIHAR

The change makers....

वैज्ञानिक कारण

खून के धब्बे सूखने के बाद काले क्यों हो जाते हैं ?

दरअसल हमारे खून में हीमोग्लोबिन और ऑक्सीजन होते हैं जिसकी वजह से यह लाल रंग का दिखाई देता है। खून में आयरन और ऑक्सीजन की प्रचुर मात्रा होती है। जैसे ही खून हमारे शरीर से अलग होता है इस में ऑक्सीजन की मात्रा धीरे-धीरे कम होने लगती है। खून में ऑक्सीजन की कमी से खून का लाल रंग धीरे - धीरे कम होने लगता है और खून काले रंग का दिखाई देने लगता है। यह रंग हवा के संपर्क में आने के बाद धीरे-धीरे बदलता है। इसी कारण से खून के धब्बे सूखने के बाद काले हो जाते हैं।

-: प्रस्तुतकर्ता :-

त्रिपुरारि राय
मध्य विद्यालय रौटी, महिषी (सहरसा)

अंग्रेजी सीखें

NOUNS

A noun is a person, place, animal, thing, or idea.

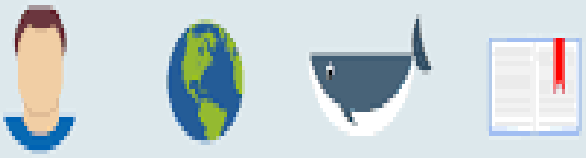

Person	Place	Animal	Thing
man	Paris	dog	book
Ann	city	cat	pencil
girl	school	whale	apple
Steve	home	lion	flower
child	Asia	bee	disease
Grandma	space	bull	shoe
Grandpa	kitchen	lizard	cap

हिंदी ज्ञान : विपरीतार्थक शब्द

चर	अचर	चंड	शांत
चतुर	मूढ़	चेतन	अचेतन
चढ़ाव	उतार	चिकना	खुरदरा
चल	अचल	चाहा	अनचाहा
चर्चित	अचर्चित	चैन	बेचैन
चाटुकार	स्वाभिमानी	चिन्तित	निश्चिन्त
चारु	अचारु	चिरायु	अल्पायु
चित्र	विचित्र	चिरंतन	नश्वर
चिर	अचिर	चिरस्थायी	अल्पस्थायी
चोर	साधु	चपल	स्थिर
चंचु	अयशस्वी	चेष्टा	निश्चेष्टा

मेहंदी डिजाइन

ऋद्धि कुमारी, रा.स.उ.वि. नौहट्टा, सहरसा

आपकी बात आपकी जुबानी

बच्चों आपको बालमंच का ये अंक कैसा लगा हमें अवश्य बताएँ| आप हमें नीचे दिए गए किसी भी माध्यम email या whatsapp द्वारा सूचित कर सकते हैं|

email-

balmanch.teachersofbihar@gmail.com

Whatsapp No. :- 6202839650

(Tripurari Roy)

धन्यवाद

ये हैं उ.म.वि.गोलहट्टी, बौंसी (बांका) की आठवीं की छात्रा दीपा कुमारी जो ब्लेड और सब्जी काटने वाली हँसुआ की मदद से पुराने जिन्स पेंट को काटकर स्कूल बैग और जैकेट बना डाली

दीपा कुमारी वर्ग-8

हँसो रे बाबू

21 दिन लॉक डाउन में रहने और रामायण-महाभारत देखने के बाद,

ऑफिस जॉइन करने पर हो सकता है बॉस को देखते ही मुँह से निकले...

महाराज की जय हो !!

टीचर :- बच्चों "जले में नमक छिड़कना" को उदहारण सहित समझाओ!

बच्चा :- पेट्रोल पंप पर मोदी जी की मुस्कुराती हुई फोटो

टीचर :- शाबाश बेटा!

-: महत्वपूर्ण दिवस :-

(1) विश्व रुपिलेप्सी दिवस - 2 फरवरी
(2) विश्व कैंसर दिवस - 4 फरवरी
(3) विश्व रेडियो दिवस - 13 फरवरी
(4) वेलेंटाईन दिवस - 14 फरवरी
(5) विश्व सामाजिक न्याय दिवस - 20 फरवरी
(6) अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस - 21 फरवरी
(7) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क दिवस - 24 फरवरी
(8) राष्ट्रीय विज्ञान दिवस - 28 फरवरी

—: संकलन :—
केशव राज
वर्ग - दशम

जिज्ञासा कुमारी

शिक्षकों का, शिक्षकों के लिए और शिक्षकों के द्वारा बनाया गया बिहार का सबसे बड़ा प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी फोरम टीचर्स ऑफ़ बिहार के विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से आज ही जुड़े और गर्व से कहें "हां, मैं हूं टीचर्स ऑफ बिहार!"

उभरते सितारे

उभरते सितारे के स्तम्भ में हम इस अंक से वैसे बाल कलाकार को प्रशस्ति पत्र देने जा रहे हैं जिनकी चित्र या कला पिछले अंक में सर्वश्रेष्ठ रहा है | धन्यवाद |

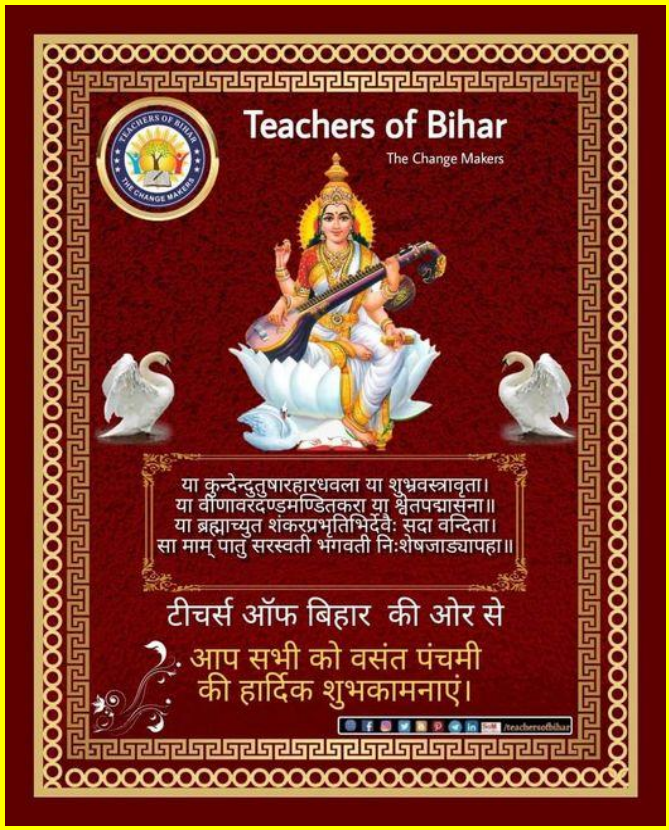

THE END